ShodhSamajik: Journal of Social Studies
October-December 2026 3(3)
https://shodhsamajik.com/

Original Article

THE NEED FOR MORAL VALUES IN THE CURRENT EDUCATION SYSTEM

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता

Rakesh Singh Parmar [1*], **Dr. Mamta** [2]
[1] Research Scholar, Vikrant University, Gwalior, India
[2] Associate Professor School of Humanities and Culture, Vikrant University, Gwalior, India

ABSTRACT

English: In the current global landscape, the education system is undergoing a phase of rapid transformation. The primary objective of modern education is increasingly focused on the development of knowledge, skills, and technical proficiency, which has resulted in moral and human values being relegated to a secondary position. This trend has led to a persistent rise in issues such as moral decline, indiscipline, violence, intolerance, and a lack of social responsibility within society. Under these circumstances, the integration of moral values into the education system becomes highly relevant and essential. Moral values—such as truth, honesty, tolerance, compassion, self-restraint, and responsibility—not only assist in shaping an individual's character but also strengthen peace, harmony, and democratic consciousness in society. At the school level, moral education plays a crucial role in the holistic development of students by fostering moral discernment, social sensitivity, and a positive outlook on life. In the contemporary education system, the inclusion of moral values has emerged as a significant challenge due to factors such as intensifying competition, commercialization, reliance on technology, and rapid social change. In this context, teachers, the curriculum, co-curricular activities, and the school environment can play a vital role in promoting moral values. The National Education Policy (NEP) 2020 also places special emphasis on value-based, holistic, and human-centric education.

Hindi: वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा प्रणाली तीव्र परिवर्तन के चरण से गुजर रही है। आधुनिक शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान, कौशल तथा तकनीकी दक्षता का विकास बनता जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप नैतिक एवं मानवीय मूल्यों को अपेक्षाकृत गौण स्थान प्राप्त हो रहा है। इस प्रवृत्ति के कारण समाज में नैतिक पतन, अनुशासनहीनता, हिंसा, असहिष्णुता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के अभाव जैसी समस्याएँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता अत्यंत प्रासंगिक एवं अनिवार्य हो जाती है।नैतिक मूल्य—जैसे सत्य, ईमानदारी, सहिष्णुता, करुणा, आत्मसंयम एवं उत्तरदायित्व—न केवल व्यक्ति के चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं, बल्कि समाज में शांति, सद्भाव तथा लोकतांत्रिक चेतना को भी सुदृढ़ करते हैं। विद्यालयी स्तर पर नैतिक शिक्षा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह उनमें नैतिक विवेक, सामाजिक संवेदनशीलता एवं सकारात्मक जीवन-दृष्टिकोण का विकास करती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, व्यावसायीकरण, तकनीकी निर्भरता तथा तीव्र सामाजिक परिवर्तन के कारण नैतिक मूल्यों का समावेश एक गंभीर चुनौती के रूप में उभर कर सामने आया है। इस संदर्भ में शिक्षक, पाठ्यक्रम, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ तथा विद्यालयी वातावरण नैतिक मूल्यों के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी मूल्य-आधारित, समग्र तथा मानव-केंद्रित शिक्षा पर विशेष बल देती है।

Keywords: Moral Values, Current Education System, Value-Based Education, Character Building, All-Round Development, National Education Policy 2020, नैतिक मूल्य, वर्तमान शिक्षा प्रणाली, मूल्य-आधारित शिक्षा, चरित्र निर्माण, सर्वांगीण विकास, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

*Corresponding Author:
Email address: Rakesh Singh Parmar (Rakesh.Parmar@outlook.com)

Received: 26 September 2026; **Revised:** 23 October 2026; **Accepted:** 08 November 2026; **Published:** 18 November 2026
DOI: 10.29121/ShodhSamajik.v3.i3.2026.220
Page Number: 109-117
Journal Title: ShodhSamajik: Journal of Social Studies
Journal Abbreviation: ShodhSamajik J. Soc. Stud.
Online ISSN: 3049-2319, **Print ISSN:** 3108-2009
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

प्रस्तावना

भूमिका

शिक्षा किसी भी समाज के बौद्धिक, सामाजिक और नैतिक विकास की आधारशिला होती है। भारतीय परंपरा में शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम न मानकर व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का साधन माना गया है। प्राचीन काल से ही शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र निर्माण, नैतिक चेतना के विकास तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को जाग्रत करना रहा है। किंतु वर्तमान शिक्षा प्रणाली में तीव्र सामाजिक परिवर्तन, वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति तथा बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण शिक्षा का स्वरूप मुख्यतः ज्ञान, कौशल और रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण तक सीमित होता जा रहा है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अंकों, परीक्षाओं और उपलब्धियों पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की उपेक्षा हो रही है। विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता, असहिष्णुता, हिंसा, स्वार्थपरकता और सामाजिक उत्तरदायित्व की कमी जैसी समस्याएँ तेजी से उभर रही हैं। यह स्थिति इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि शिक्षा अपने मूल उद्देश्य से भटकती जा रही है। ऐसे समय में शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की पुनः स्थापना की आवश्यकता अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है।

नैतिक मूल्य जैसे सत्य, ईमानदारी, करुणा, सहिष्णुता, आत्मसंयम और कर्तव्यबोध व्यक्ति के व्यक्तित्व को संतुलित एवं समाजोपयोगी बनाते हैं। विद्यालयी शिक्षा का दायित्व है कि वह विद्यार्थियों में केवल बौद्धिक दक्षता ही नहीं, बल्कि नैतिक विवेक और सामाजिक चेतना का भी विकास करे। इस संदर्भ में शिक्षक, पाठ्यक्रम, विद्यालयी वातावरण और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अतः वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता पर गंभीर चिंतन एवं शोध अत्यंत आवश्यक हो गया है।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

वर्तमान समाज अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। तकनीकी क्रांति, डिजिटल मीडिया, उपभोक्तावाद और वैश्वीकरण ने मानव जीवन को सुविधाजनक तो बनाया है, किंतु इसके साथ-साथ नैतिक मूल्यों पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाला है। पारिवारिक संरचना में परिवर्तन, संयुक्त परिवारों का विघटन तथा सामाजिक नियंत्रण की कमी ने नई पीढ़ी के नैतिक विकास को चुनौतीपूर्ण बना दिया है। इन परिवर्तनों का प्रभाव शिक्षा प्रणाली पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ज्ञान और कौशल को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है, जबकि नैतिक एवं मानवीय मूल्यों को अपेक्षित स्थान नहीं मिल पा रहा है। शिक्षा का उद्देश्य रोजगार प्राप्त करना और आर्थिक सफलता तक सीमित होता जा रहा है। परिणामस्वरूप शिक्षा और नैतिकता के बीच की दूरी बढ़ती जा रही है। विद्यार्थियों में नैतिक विवेक का अभाव, अनुशासनहीनता, सामाजिक असंवेदनशीलता और नैतिक दुविधाएँ इसी का परिणाम हैं।

इस पृष्ठभूमि में यह आवश्यक हो गया है कि शिक्षा प्रणाली की भूमिका का पुनर्मूल्यांकन किया जाए। शिक्षा केवल ज्ञान हस्तांतरण का माध्यम नहीं, बल्कि समाज निर्माण का सशक्त उपकरण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी मूल्य आधारित, समग्र एवं मानव-केंद्रित शिक्षा पर बल दिया है। नीति में भारतीय संस्कृति, नैतिकता और संवैधानिक मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

अतः वर्तमान सामाजिक एवं शैक्षिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए नैतिक मूल्यों की आवश्यकता पर आधारित अध्ययन न केवल समयोचित है, बल्कि सामाजिक सुधार और शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अध्ययन का महत्व

1) शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता को स्पष्ट करना।
2) विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में नैतिक शिक्षा की भूमिका को रेखांकित करना।
3) शिक्षकों एवं शिक्षाविदों को मूल्य आधारित शिक्षा के प्रति जागरूक करना।
4) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल्य आधारित दृष्टिकोण को समझने में सहायक।
5) समाज में नैतिक पतन की समस्याओं के समाधान हेतु मार्गदर्शन प्रदान करना।

अध्ययन के उद्देश्य

1) वर्तमान शिक्षा प्रणाली का नैतिक मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन करना।
2) नैतिक मूल्यों की अवधारणा एवं महत्व को स्पष्ट करना।
3) विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में नैतिक मूल्यों की भूमिका का विश्लेषण करना।
4) नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारणों की पहचान करना
5) नैतिक मूल्यों के संवर्धन हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

अध्ययन का क्षेत्र

- अध्ययन वर्तमान शिक्षा प्रणाली तक सीमित है।
- विद्यालयी शिक्षा के संदर्भ में नैतिक मूल्यों पर विशेष ध्यान।
- सैद्धांतिक एवं वर्णनात्मक अध्ययन।
- भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित।

अध्ययन की सीमाएँ

- क्षेत्रीय सर्वेक्षण या सांख्यिकीय विश्लेषण सम्मिलित नहीं है।
- सभी सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधताओं को पूर्णतः समाहित करना संभव नहीं।
- अध्ययन का दायरा सीमित होने के कारण निष्कर्ष सामान्यीकरण योग्य नहीं।

नैतिक मूल्यों की अवधारणा
नैतिक मूल्य: अर्थ और परिभाषा

नैतिक मूल्य वे स्थायी सिद्धांत और मानक हैं जो व्यक्ति के व्यवहार, निर्णय और सामाजिक सहभागिता को मार्गदर्शित करते हैं। ये मूल्य यह निर्धारित करते हैं कि क्या सही है और क्या गलत, क्या उचित है और क्या अनुचित। सरल शब्दों में, नैतिक मूल्य व्यक्तियों और समाज के लिए "अच्छाई और जिम्मेदारी की मानक" स्थापित करते हैं।

शिक्षाशास्त्रियों के अनुसार, नैतिक मूल्य व्यक्ति के चरित्र, सामाजिक व्यवहार और जीवन दृष्टिकोण का आधार बनते हैं। उदाहरण के लिए, जेनेवा (2015) ने नैतिक मूल्य को "व्यक्ति के व्यक्तिगत और सामाजिक निर्णयों में दिशा देने वाले नैतिक सिद्धांत" के रूप में परिभाषित किया है।

प्रमुख नैतिक मूल्य

- सत्य (Truthfulness): सत्य बोलना और सच्चाई के मार्ग पर चलना व्यक्ति को विश्वासयोग्य बनाता है। शिक्षा में सत्य की शिक्षा विद्यार्थियों में नैतिक विवेक और ईमानदारी की भावना विकसित करती है।
- ईमानदारी (Honesty): व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में ईमानदारी व्यक्ति को सम्मान और विश्वसनीयता प्रदान करती है। विद्यालय में ईमानदारी के अभ्यास से अनुशासन और न्यायप्रियता की भावना बढ़ती है।
- सहिष्णुता (Tolerance): सहिष्णुता अन्य व्यक्तियों के विचारों, धर्मों और संस्कृतियों के प्रति सम्मान और समझ विकसित करती है। यह सामाजिक समरसता और सामूहिक सहयोग की नींव है।
- करुणा (Compassion): दूसरों के दुःख और पीड़ा को समझना और उनकी सहायता करना करुणा का प्रतीक है। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में सामाजिक संवेदनशीलता का विकास होता है।
- आत्मसंयम (Self-discipline): आत्मसंयम से व्यक्ति अपनी इच्छाओं और आवेगों को नियंत्रित कर सकता है। यह अध्ययन और जीवन में सफलता का आधार है।
- उत्तरदायित्व (Responsibility): अपने कर्तव्यों और सामाजिक दायित्वों को निभाना व्यक्ति के सामाजिक एवं नैतिक विकास के लिए अनिवार्य है।

इन मूल्यों का समावेश न केवल व्यक्तिगत जीवन में बल्कि समाज के विकास और सामाजिक शांति में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली की विशेषताएँ
ज्ञान और कौशल केंद्रित शिक्षा

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का प्रमुख उद्देश्य छात्रों में ज्ञान, कौशल और तकनीकी दक्षता का विकास करना है। विद्यालय और उच्च शिक्षा संस्थान मुख्यतः पाठ्यक्रम आधारित शिक्षण, व्यावहारिक कौशल प्रशिक्षण और रोजगारोन्मुखी शिक्षा पर जोर देते हैं।

- विद्यार्थियों को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ प्रयोगात्मक कौशल प्रदान किया जाता है।
- शिक्षा का ध्यान अधिकतर अंक, ग्रेड और करियर उन्नति पर केन्द्रित है।

- नैतिक और मानवीय मूल्यों को अपेक्षाकृत कम प्राथमिकता दी जाती है।

प्रतिस्पर्धा एवं व्यावसायीकरण

- आज की शिक्षा प्रणाली में अत्यधिक प्रतिस्पर्धा विद्यार्थियों के बीच तनाव और मानसिक दबाव बढ़ा रही है।
- शिक्षा का व्यावसायीकरण शिक्षा संस्थानों के लाभ और मार्केटिंग पर आधारित हो गया है।

परिणामस्वरूप, नैतिक शिक्षा, सामाजिक समरसता और चरित्र निर्माण पर कम ध्यान दिया जाता है।

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में नैतिक मूल्यों की भूमिका

नैतिक चेतना का विकास

नैतिक चेतना किसी व्यक्ति की सही और गलत, उचित और अनुचित के बीच अंतर पहचानने की क्षमता है। यह विद्यार्थियों में नैतिक विवेक और नैतिक निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करती है। विद्यालय में नैतिक शिक्षा से विद्यार्थी सीखते हैं कि व्यक्तिगत लाभ से ऊपर सामाजिक हित और दायित्व महत्वपूर्ण हैं।

नैतिक चेतना का विकास विद्यार्थियों को समाजोपयोगी, जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बनाता है।

यह उन्हें अनुशासन, ईमानदारी और सत्यनिष्ठा जैसे मूल्यों के पालन के लिए प्रेरित करता है।

भावनात्मक एवं सामाजिक विकास

- नैतिक मूल्य न केवल व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं, बल्कि उनके भावनात्मक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- करुणा और सहिष्णुता विद्यार्थियों में दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित करती हैं।
- सामाजिक उत्तरदायित्व और सहयोग की भावना विद्यार्थियों में समूह कार्य और टीम भावना को बढ़ावा देती है।
- नैतिक शिक्षा से विद्यार्थी सकारात्मक सामाजिक व्यवहार अपनाते हैं और हिंसा, द्वेष या असहिष्णुता से दूर रहते हैं।

जीवन मूल्यों का निर्माण

- नैतिक मूल्य विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व और जीवन दृष्टिकोण को आकार देते हैं।
- ये मूल्य सत्य, ईमानदारी, आत्मसंयम और न्यायप्रियता जैसी आदतों को दैनिक जीवन में शामिल करते हैं।
- विद्यार्थियों में संतुलित निर्णय क्षमता और दीर्घकालीन सोच का विकास होता है।
- जीवन मूल्यों का निर्माण उन्हें सार्थक और जिम्मेदार जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

शिक्षक और नैतिक मूल्यों का संवर्धन

शिक्षक का आदर्श स्वरूप

- शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाले नहीं, बल्कि छात्रों के नैतिक आदर्श और मार्गदर्शक भी होते हैं।
- शिक्षक का व्यवहार, अनुशासन और सामाजिक दृष्टिकोण विद्यार्थियों पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है।
- शिक्षक का आदर्श स्वरूप विद्यार्थियों में सत्यनिष्ठा, सम्मान और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करता है।

शिक्षक-छात्र संबंध

- शिक्षक और छात्र के बीच सकारात्मक संबंध नैतिक मूल्यों के संवर्धन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।
- सम्मानपूर्ण और सहयोगी शिक्षक-छात्र संबंध विद्यार्थियों में सहिष्णुता, आदर और सामाजिक संवेदनशीलता विकसित करते हैं।
- ऐसे संबंध छात्रों को नैतिक निर्णय लेने और चरित्र निर्माण में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

मूल्य आधारित शिक्षण

- मूल्य आधारित शिक्षण में शिक्षक पाठ्यक्रम के साथ-साथ नैतिक शिक्षा और सामाजिक मूल्यों को विद्यार्थियों में समाहित करता है।
- पाठ्यक्रम में नैतिक कथाएँ, समूह चर्चा, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ और व्यवहारिक प्रशिक्षण शामिल किए जाते हैं।
- यह शिक्षण विधि विद्यार्थियों में नैतिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को विकसित करती है।
- मूल्य आधारित शिक्षण का उद्देश्य केवल ज्ञान नहीं, बल्कि संपूर्ण व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण है।

साहित्य समीक्षा

1) सरीता थेबार और डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय (2024)

Rajasthan में नैतिक विकास का मार्ग: विद्यालयों में मूल्य-आधारित शिक्षा का अध्ययन यह शोध राजस्थान के विद्यालयों में मूल्य-आधारित शिक्षा की वर्तमान स्थिति और नैतिक विकास की आवश्यकता का विश्लेषण करता है। अध्ययन से पता चला कि मूल्य-आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों में नैतिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व और चरित्र निर्माण को बढ़ावा मिलता है। शोध में यह भी निष्कर्ष निकाला गया कि केवल तकनीकी और ज्ञान-केंद्रित शिक्षा से नैतिक विकास संभव नहीं है, इसलिए इसे पाठ्यक्रम में समाहित करना आवश्यक है।

2) डॉ. धर्मेन्द्र मेहता, डॉ. नवीन कुमार मेहता और डॉ. राजेश कुमार मेहता (2025)

भारत में मूल्य शिक्षा: समय की आवश्यकता

इस अध्ययन में मूल्य शिक्षा के महत्व को भारतीय संस्कृति और परंपरा के संदर्भ में समझाया गया है। शोध के अनुसार, आज का समाज भौतिकवाद, प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत लाभ की सोच में उलझा हुआ है, जिससे नैतिकता का पतन हुआ है। अध्ययन में कहा गया कि उच्च शिक्षा संस्थानों को विद्यार्थियों में नैतिक चेतना और सामाजिक प्रतिबद्धता विकसित करने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

3) डॉ. पीयूष कुमार शुक्ला (2024)

शिक्षा के क्षेत्र में नैतिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा का दार्शनिक अध्ययन

इस शोध में नैतिक और मूल्य शिक्षा के दार्शनिक आधार और आधुनिक शिक्षा में उनकी आवश्यकता पर बल दिया गया है। अध्ययन में बताया गया कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में केवल बौद्धिक कौशल नहीं, बल्कि नैतिक विवेक और सामाजिक जिम्मेदारी का विकास भी आवश्यक है। शोध में यह निष्कर्ष निकाला गया कि वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों का महत्व पहले से कहीं अधिक है।

4) प्रीति शाक्या और डॉ. दिलीप कुमार शुक्ला (2025)

शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का अध्ययन

यह शोध भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा के समावेश पर केंद्रित है। अध्ययन में कहा गया कि शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि जिम्मेदार और संस्कारी नागरिकों का निर्माण होना चाहिए। शोध में नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का अनिवार्य भाग बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

5) डॉ. प्रवीण कुमार गुप्ता एवं अनुरूपिका व्यास (2025)

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना

यह शोध आधुनिक शिक्षा में नैतिक मूल्यों के पतन का विश्लेषण करता है। अध्ययन में बताया गया कि प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन, जैसे गुरुकुल प्रणाली, नैतिकता, चरित्र और सामाजिक दायित्व की शिक्षा पर आधारित था। आधुनिक प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षा ने नैतिकता को उपेक्षित किया है, इसलिए इसे आज की शिक्षा में पुनर्स्थापित करना अत्यावश्यक है।

अनुसंधान कार्यविधि
अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता के प्रति विद्यार्थियों और शिक्षकों की धारणा का विश्लेषण करना है।

अनुसंधान अभिकल्प

इस शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान अभिकल्प (Descriptive Research Design) अपनाया गया है, जिससे नैतिक मूल्यों से संबंधित विचारों, दृष्टिकोणों एवं अनुभवों का अध्ययन किया जा सके।

नमूना आकार

- अध्ययन हेतु 100 उत्तरदाताओं का चयन किया गया, जिसमें–
- 70 विद्यार्थी
- 30 शिक्षक

शामिल हैं। न्यादर्श का चयन सुविधाजनक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया।

आँकड़ा संकलन विधि

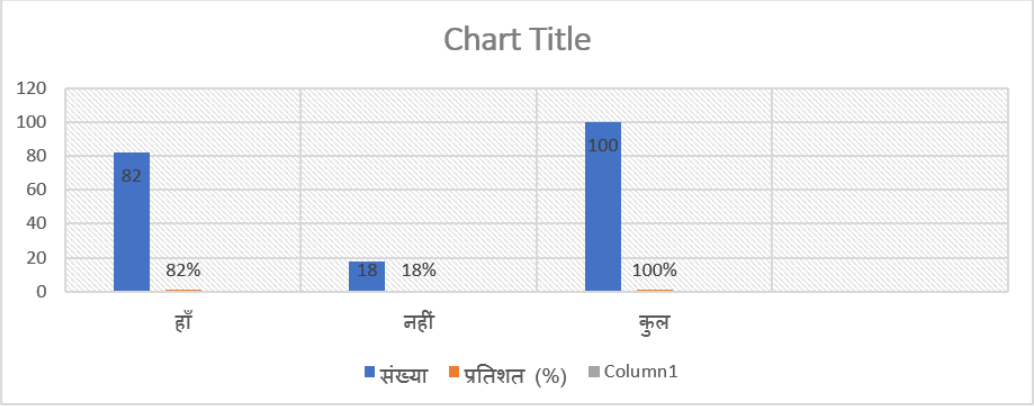
आँकड़ों का संकलन स्व-निर्मित प्रश्नावली के माध्यम से किया गया। प्रश्नावली में नैतिक शिक्षा, वर्तमान शिक्षा प्रणाली और मूल्यों से संबंधित बहुविकल्पीय प्रश्न सम्मिलित थे।

आँकड़ा विश्लेषण

तालिका 1

तालिका 1 क्या वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता है?

उत्तर	संख्या	प्रतिशत (%)
हाँ	82	82%
नहीं	18	18%
कुल	100	100%



व्याख्या:

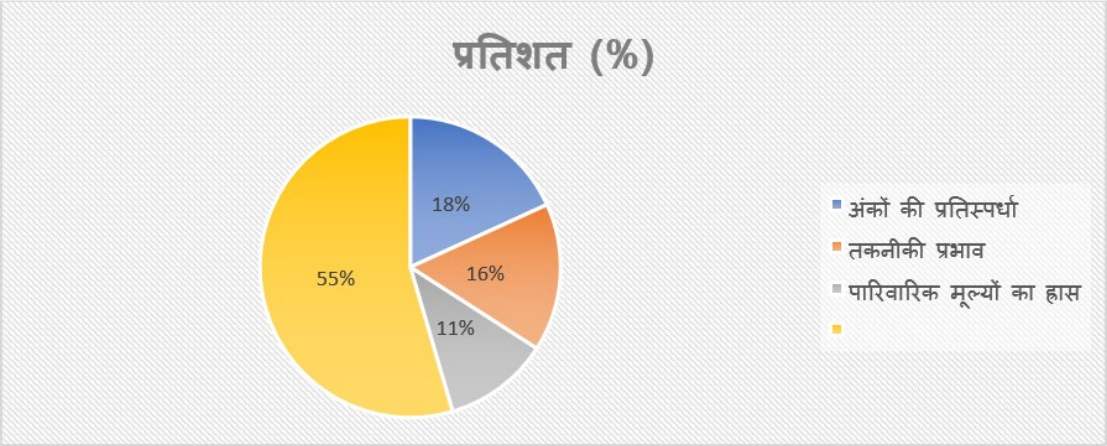
तालिका से स्पष्ट है कि 82% उत्तरदाता वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों को आवश्यक मानते हैं।

तालिका 2

तालिका 2 नैतिक मूल्यों के ह्रास का प्रमुख कारण

कारण	प्रतिशत (%)
अंकों की प्रतिस्पर्धा	40%
तकनीकी प्रभाव	35%

पारिवारिक मूल्यों का ह्रास	25%

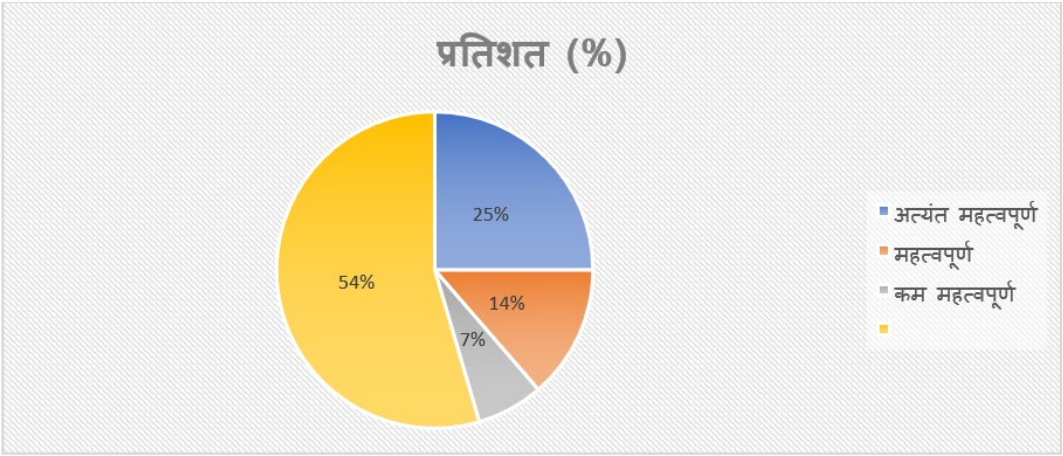


व्याख्या:

अधिकांश उत्तरदाताओं (40%) ने अंकों की प्रतिस्पर्धा को नैतिक मूल्यों के ह्रास का मुख्य कारण बताया।

तालिका 3

तालिका 3 नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षक की भूमिका	
मत	प्रतिशत (%)
अत्यंत महत्वपूर्ण	55%
महत्वपूर्ण	30%
कम महत्वपूर्ण	15%



व्याख्या:

55% उत्तरदाताओं का मानना है कि शिक्षक की भूमिका नैतिक मूल्यों के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

चर्चा

उपरोक्त विश्लेषण और शोध परिणामों से स्पष्ट होता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता व्यापक रूप से स्वीकार की जा रही है। आधुनिक विद्यालय और उच्च शिक्षा संस्थान मुख्य रूप से ज्ञान, तकनीकी दक्षता और व्यावसायिक कौशल विकसित करने पर केंद्रित हैं, जिससे विद्यार्थियों में नैतिक चेतना और सामाजिक जिम्मेदारी पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जा रहा है। अनुसंधान से यह भी पता चला है कि अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षा, अंक-केंद्रित मूल्यांकन और तकनीकी निर्भरता विद्यार्थियों के नैतिक विकास में बाधक बन रही है।

शोध परिणामों के अनुसार, शिक्षक, पाठ्यक्रम और विद्यालयी वातावरण नैतिक मूल्य संवर्धन में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। शिक्षक केवल ज्ञान देने वाले नहीं, बल्कि छात्रों के आदर्श, मार्गदर्शक और नैतिक चेतना के प्रेरक भी होते हैं। शिक्षक-छात्र संबंध यदि सम्मान और सहयोग पर आधारित हों, तो विद्यार्थी नैतिक मूल्यों को अपने व्यवहार में आत्मसात कर सकते हैं।

साथ ही, पाठ्यक्रम में मूल्य आधारित शिक्षण और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ जैसे योग, ध्यान, नाटक, सामाजिक सेवा कार्य और समूह चर्चा विद्यार्थियों में नैतिक चेतना, सामाजिक सहयोग और जिम्मेदारी की भावना विकसित करती हैं। यह स्पष्ट होता है कि नैतिक शिक्षा केवल सैद्धांतिक रूप से नहीं बल्कि व्यवहारिक और अनुभवात्मक रूप से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और सामाजिक व्यवहार में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकती है।

अध्ययन से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में मूल्य आधारित शिक्षा का समावेश आवश्यक है। इससे न केवल विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि समाज में अनुशासन, सामाजिक समरसता और नैतिक उत्तरदायित्व की भावना भी मजबूत होगी। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान और कौशल नहीं, बल्कि संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास होना चाहिए।

सुझाव

- विद्यालयी पाठ्यक्रम में नैतिक एवं मूल्य आधारित विषयों को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाए।
- शिक्षकों के लिए नैतिक शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
- सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों जैसे योग, ध्यान, नाटक और सेवा कार्यों को बढ़ावा दिया जाए।
- मूल्य शिक्षा को केवल सैद्धांतिक न रखकर व्यवहारिक बनाया जाए
- विद्यालय, परिवार और समाज के बीच समन्वय स्थापित किया जाए।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल्य आधारित दृष्टिकोण को प्रभावी रूप से लागू किया जाए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों का समावेश अत्यंत आवश्यक है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने विद्यार्थियों को ज्ञान, तकनीकी कौशल और व्यावसायिक दक्षता प्रदान करने में सफलता प्राप्त की है, लेकिन नैतिक और मानवीय मूल्यों के क्षेत्र में अपेक्षित परिणाम नहीं दिखाए हैं।

नैतिक मूल्यों के अभाव में शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना और दक्षता प्रदान करना रह जाता है और यह विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक विवेक के विकास में विफल रहती है। नैतिक शिक्षा के समावेश से विद्यार्थी जिम्मेदार, संवेदनशील और अनुशासित नागरिक बनते हैं। शिक्षक, पाठ्यक्रम और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

अतः कहा जा सकता है कि एक संतुलित, जिम्मेदार और नैतिक समाज के निर्माण के लिए शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों को केंद्रीय स्थान दिया जाना चाहिए। मूल्य आधारित शिक्षा ही राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला बन सकती है और विद्यार्थियों को न केवल तकनीकी दक्षता, बल्कि जीवन में नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय चेतना प्रदान कर सकती है।

REFERENCES

Gupta, P., and Vyas, A. (2025). Reinstatement of Moral Values in the Contemporary Education System: An Analytical Study of Ancient Indian Educational Philosophy and Modern Context (समकालीन शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों का पुनर्स्थापन: प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन एवं आधुनिक संदर्भ का विश्लेषणात्मक अध्ययन). Research Review Journal of Social Science, 5(1), 146–148. https://doi.org/10.31305/rrjss.2025.v05.n01.019

Shakya, P., and Shukla, D. K. (2025). A Study of Moral Education in the Education System (शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का अध्ययन). Journal of Advanced and Scholarly Researches in Allied Education (JASRAE). https://ignited.in/index.php/jasrae/article/view/12927

Thebar, S., and Upadhyay, V. K. (2024). Value-Based Education in Rajasthan: A Study of Moral Development (राजस्थान में मूल्य-आधारित शिक्षा: नैतिक विकास का अध्ययन). ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 5(5), 1501–1505. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.3343

Dev, A. K., and Dave, P. (2024). The Need for Value Education (मूल्य शिक्षा की आवश्यकता). Bharatiya Adhunik Shiksha (Indian Modern Education), 35(1), 5–9. https://ejournals.ncert.gov.in/index.php/bas/article/view/1878

Sinha, P. (2024). What Does Education Mean? (शिक्षा के मायने?). Bharatiya Adhunik Shiksha (Indian Modern Education), 36(2), 6–10. https://ejournals.ncert.gov.in/index.php/bas/article/view/2175

Sharma, A. (2024). The Need for Teacher Education Integrated with Human Values (मानवीय मूल्यों-समन्वित अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता). Bharatiya Adhunik Shiksha (Indian Modern Education), 32(2), 93–102. https://ejournals.ncert.gov.in/index.php/bas/article/view/721

Sharma, D. (2024). National Education Policy 2020 and value education (नई शिक्षा नीति 2020 और मूल्य शिक्षा). International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT). https://ijarmt.com/index.php/j/article/view/353

Gupta, P. K. (2024). A Philosophical Study of Moral Education and Value Education in the Field of Education (शिक्षा के क्षेत्र में नैतिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा का दार्शनिक अध्ययन). International Journal of Research - GRANTHAALAYAH, 12(12), 175–183. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v12.i12.2024.6303

Rajput, R. K. (2025). Crisis of Moral Values Among Indian Youth: Value-Based Practice Education (भारतीय युवाओं में नैतिक मूल्यों का संकट: मूल्य आधारित अभ्यास शिक्षा). International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology. https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i1.33

Vasava, D. J. (2023). Challenges and Solutions of Value Education in the Current School Curriculum (वर्तमान विद्यालय पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा की चुनौतियाँ और समाधान). ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v4.i1.2023.3538

Mehta, D., Mehta, N. K., and Mehta, R. K. (2025). Value Education in India: The Need of the Hour (भारत में मूल्य शिक्षा: समय की आवश्यकता). International Education and Research Journal (IERJ). https://ierj.in/journal/index.php/ierj/article/view/1038

Acharya, H. S., and Sthapak, P. (2021). A Study Based on Moral Education in India (भारत में नैतिक शिक्षा पर आधारित अध्ययन). International Journal of Innovation in Engineering Research and Management. https://journal.ijierm.co.in/index.php/ijierm/article/view/2024

Srivastava, M. K., Chaudhary, H., Sota, S., and Tanwar, A. S. (2021). Research on Value Education in schools: An academic review and classification (विद्यालयों में मूल्य शिक्षा पर शोध: अकादमिक समीक्षा एवं वर्गीकरण). Indian Educational Review, 59(1), 31–61. https://ejournals.ncert.gov.in/index.php/ier/article/view/3270

National Education Policy 2020: Moral Values and Educational Reforms in India (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: भारत में नैतिक मूल्य और शिक्षा सुधार). (2024). Shodhpatrika. https://shodhpatrika.in/index.php/hindi/article/view/292

Mehta, D., Mehta, N. K., and Mehta, R. K. (2023). Value Education and the Indian Cultural Environment (मूल्य शिक्षा और भारतीय सांस्कृतिक वातावरण). Bharatiya Shiksha Journal (Indian Education Journal).

Value Education in Modern Schools: An Indian Perspective (आधुनिक विद्यालयों में मूल्य शिक्षा का भारतीय संदर्भ). (2025). Indian Educational Perspectives. Granthaalayah Publications.

The Role of Teachers in Moral Education (नैतिक शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका). (2024). Education Today: Indian Journal of School Education. NCERT.

Singh, A. (2023). Implementation of Value-Based Education in Indian Schools (भारतीय विद्यालयों में मूल्य-आधारित शिक्षा का कार्यान्वयन). School Education Journal of India. Granthaalayah Publications.

Moral Education for Holistic Development (समग्र विकास के लिए नैतिक शिक्षा). (2024). Indian Education Review Quarterly. IJARMT.

Importance of Value Education in the Indian Curriculum (भारतीय पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा का महत्व). (2025). Indian Journal of Value Education Research. Granthaalayah Publications.